International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 14-02-2019; Accepted: 17-03-2019
www.educationjournal.in
Volume 4; Issue 3; May 2019; Page No. 31-32

प्रतिमा विज्ञान में सूर्य

डॉ0 सन्तोष कुमार शुक्ल
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

सूर्य प्रकृति की आदिम शाक्तियों में से एक है। सूर्य उन प्राकृतिक शक्तियों में से है, जिसे मनुष्य ने सबसे पहले देवत्व प्रदान किया। इसी कारण सूर्योपासना की परम्परा संसार के अनेक प्राचीन सभ्यताओं में प्रचलित रही। वैदिक काल के महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय देवता सूर्य का ब्राह्मण प्रतिमाओं में महत्वपूर्ण स्थान है। ऋग्वेद में सूर्य को जगत की आत्मा कहा गया है। जबकि महाभारत में सूर्य को देवेश्वर कहा गया है।[66] विष्णु, वायु और ब्रह्मण्ड पुराणों में सूर्य का विशेष महत्व वर्णित है। सूर्य के साथ सवितृ, धाता, मित्र, अर्यमा, विष्णु, विवस्वत्, पूषन, भग, रूद्र एवं वरूण आदि देवताओं को सम्मिलित किया गया है। सूर्य नवग्रहों यथा–सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र, राहू तथ केतु में सर्वप्रमुख हैं। जिनकी पूजा सांसारिक सुख, ऐश्वर्य, समृद्धि तथा शान्ति के लिए सदा से होती रही है। कला में सूर्य के मानवीय स्वरुप का अंकन ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से प्रारम्भ हुआ और ईस्वी सन् से लेकर बारहवीं शताब्दी तक सर्वत्र सूर्य प्रतिमाएँ बनती रही।

शुंगकालीन सूर्य प्रतिमाओं में सूर्य चार घोड़ों से युक्त रथ पर आरूढ़ है जो धोती एवं उत्तरीय धारण किये हुये हैं। सूर्य के दोनों ओर से ऊषा और प्रत्यूषा धनुष पर तीर चढ़ाए हुए अंकित हैं, जो कि सूर्य की रश्मियों द्वारा अंधकार के विनाश का मानवीकृत स्वरूप है।

कुषाण कालीन सूर्य प्रतिमाओं पर विदेशी प्रभाव दिखायी देता है। उन्हें दो अथवा चार घोड़ों से युक्त रथ पर उदीच्य वेशभूषा में पर्यंकललितासन मुद्रा में बनाया गया है। हिन्दू देवताओं में केवल सूर्य की प्रतिमा में जूतों का प्रदर्शन किया गया है। यही कारण है कि डा0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने सूर्य की प्रतिमा पर शकों के प्रभाव को स्वीकार किया है। कनिष्क की स्वर्ण मुद्राओं पर मिहिर का नाम प्राप्त हुआ है, जिसका समीकरण ईरानी सूर्य देवता मिहिर से है। अतः सूर्य प्रतिमा पर शक एवं ईरानी प्रभाव देखे जा सकते हैं।

गुप्तकालीन सूर्य प्रतिमाओं में अनेक कलात्मक लक्षणों का समावेश हो गया और उनका अंकन विविध स्वरूपों एवं पारिवारिक जनों के साथ किया गया। सूर्य के परिवार में ऊषा, प्रत्यूषा, राज्ञी, निक्षुभा नायक पत्नियों, दण्ड एवं पिंगल नामक अनुचर और अरुण नामक सारथी को सम्मिलित किया गया है। इस युग में सूर्य के रथ में सात घोड़े दिखाये जाने लगे। उनके हाथों में कमल एवं ऊना कटार को दर्शाया गया है।

कलात्मक दृष्टि से सूर्य प्रतिमाओं का निर्माण स्थानक और आसन दोनों मुद्राओ मे किया गया। स्थानक प्रतिमाओं में सूर्य का शिरोभाग मुकुट से सुशोभित रहता है। वे दोनों हाथों में कमलनाल पकड़े हुए सात घोड़ों के रथ पर प्रायः खड़ी हुई मुद्रा में प्रदर्शित हैं। रथ का सारथी अरुण है। दाँयी एवं बायीं ओर दो पुरूष पिंगल और दण्ड को दर्शाया गया है। उनकी दोनों पत्नियाँ ऊषा तथा प्रत्यूषा का भी अंकन रहता है। आसन प्रतिमाओं में सूर्य को रथ पर आरूढ़ दिखाया गया है। वे पालथी मारकर बैठे होते हैं और उनके दोनों हाथों में उत्फुल्ल कमल का अंकन है। कला के अन्तर्गत सूर्य प्रतिमा को दो रूपों में प्रदर्शित किया गया है।–

1. उत्तरी वेशभूषा : उत्तरी वेशभूषा में सूर्य के हाथ स्वाभाविक हैं। उनमें पूर्ण विकसित कमल रहता है जो कन्धे तक ऊपर उठा रहता है। पैरों में मोजे की भाँति का आवरण रहता है। चरण बूट के समान जूते से ढके रहते हैं। इनका शरीर कोट के आकार के एक पतले वस्त्र से ढका रहता है।

2. दक्षिणी वेशभूषा : दक्षिण भारत की सूर्य प्रतिमाओं में हाथ ऊपर कन्धे तक उठा रहता है और अर्द्ध विकसित कमल पुष्प हाथों में रहता है। चरण एवं जंधे नग्न होते हैं। ऊर्ध्वबन्ध रहता है, लेकिन सारथी एवं अनुचर का अभाव रहता है।

सूर्य प्रतिमा लक्षण के विषय में मत्स्यपुराण, बृहत्संहिता और विष्णुधर्मोत्तरपुराण में विस्तृत विवरण मिलता है। सूर्य प्रतिमा निमार्ण का प्राचीनतम उल्लेख बृहत्संहिता में हैं। जिसके अनुसार सूर्य को उत्तरी वेश–भूषा (उदीच्यवेश) में दिखाया जाना चाहिए। जबकि विष्णु धर्मोत्तरपुराण के अनुसार सूर्य का रूप अत्यन्त सुन्दर है, उनका वर्ण सिन्दूर के समान लाल है और मूँछे चमकती हुई हैं। उत्तरी वेश–भूषा से उनका शरीर सुसज्जित रहता है। सभी आभूषण शरीर पर धारण करते हैं, चार भुजाएँ हैं और शरीर कबन्ध से ढँका रहता है। इसके अतिरिक्त कमर में करधनी पहनते हैं, जो याविायागं कहलाती है।

इस प्रकार शोध–पत्र से सूर्य के मानवीय एवं दैवी स्वरुप की मान्यता और मूर्तिकला में स्थान स्पष्ट होता है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण : भारतीय कला, पृथिवी प्रकाशन, वाराणसी, 2010
2. अग्रवाल, पृथ्वीकुमार : प्राचीन भारतीय कला एवं वास्तु, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007
3. उपाध्याय, वासुदेव : प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी,1982
4. पाण्डेय, प्रो0 जयनारायण : भारतीय कला, भाग–एक, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, 2008
5. चन्द्र, प्रमोद : द स्टोन स्कल्पचर इन द इलाहाबाद म्यूजियम ए0 आई0 एस0 पब्लिकेशन नं0 2, पूना, 1970
6. वाजपेयी, सन्तोष कुमार : गुप्तकालीन मूर्तिकला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन, दिल्ली, 1992
7. श्रीवास्तव, बृजभूषण : प्राचीन भारतीय प्रतिमा–विज्ञान एवं मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007
8. जोशी, नीलकण्ठ पुरूषोत्तम : प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, विहार राष्ट्र भाषा परिषद्, पटना, 2000

9. मिश्र, इन्दुमती : प्रतिमा विज्ञान, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2000
10. घोष, अमलानन्द : एनॅ इनसाइक्लोपीडिया ऑव इण्डियन आर्कियोलॉजी, खण्ड–दो, नई दिल्ली, 1989
11. मितल, प्रभुदयाल : ब्रज की कलाओं का इतिहास, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1977
12. राजकीय संग्रहालय मथुरा एवं पुरातत्व संग्रहालय लखनऊ के विविध मूर्ति संग्रह।